Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अपना-अपना भाग्य कहानी में चित्रित यथार्थता

निकिता बोहिदार*

* अतिथि संकाय, सरकारी महिला महाविद्यालय, संबलपुर (ओडिशा) भारत

प्रस्तावना – जैनेंद्र कुमार द्वारा रचित अपना-अपना भाग्य कहानी में गहरा यथार्थबोध निहित है। मनुष्य अपने सुख-दुख का कारण भाग्य को मानकर संतोष कर लेता है, जबकि वास्तविकता कर्म पर आधारित है। इसके माध्यम से लेखक उस स्वार्थी मानसिकता पर प्रहार करते हैं जो संपन्न वर्ग को निर्धनों की सहायता से विमुख करती है और यह उसका भाग्य है कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं। कहानी में परिस्थितियों की विवशता और मानवीय संवेदनाओं के पतन का बिल्कुल सटीक यथार्थवोध है। अपना अपना भाग्य कहानी में पूर्ण रूप से यथार्थता को दिखाया गया है। कहानीकार जैनेंद्र कुमार ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, वर्गभेद और सुविधा संपन्न लोगों की संवेदनहीनता का अत्यंत मार्मिक और वास्तविक चित्रण किया है। इस कहानी में समाज के उस वर्ग की पीड़ा के बारे में बताया गया है जो ईमानदारी से काम करना चाहते हैं, जीना चाहते हैं लेकिन यह स्वार्थी समाज उनको अपने स्वार्थ सिद्ध के लिए इस्तेमाल करता है और उनके सुख-दुख से उनको कोई फर्क नहीं पडता।

निम्नलिखित बिंदुओं से हम अपना अपना भाग्य कहानी में चित्रित यथार्थता को समझ सकते हैं-

1. **अमीर वर्ग और गरीब वर्ग के बीच की गहरी खाई –** कहानीकार ने समाज के दोहरे चरित्र का यथार्थ चित्रण किया है। एक और नैनीताल घूमने वाले ऐसो आराम में डूबे हुए सुविधा संपन्न लोग हैं जो मौज मस्ती बर्फ का आनंद और हॉकी खेलने में व्यस्त है। दूसरी तरफ एक 10 वर्षीय गरीब पहाड़ी बच्चे की बेबसी एवं भूख का बहत ही वास्तविक चित्रण किया गया है। यह समाज के उस विभाजन का यथार्थ है,जहां एक वर्ग सभी सुख सुविधाओं में जी रहा है वहीं दूसरा वर्ग बुनियादी जरूरतो (रोटी और ठंड से बचाव के लिए कंबल के लिए तरसता है। बच्चे का बचपन गरीबी ने उससे छीन लिया है उसके पास पहनने के लिए पूरे कपड़े भी नहीं है वह ठंड से कांप रहा है लेकिन वह काम की तलाश में भटक रहा है। जहां पर उच्च वर्ग कंबल ओढ़ ठंड में सुख निद्रा ले रहा है, वहीं दूसरी तरफ इस बच्चे के पास सोने के लिए कोई स्थान ही नहीं है। कंपकंपाती ठंड में वह ठिठुरता रहता है कोई उसकी सहायता नहीं करता है।

2. **संवेदनशीलता का अभाव –** यथार्थ का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि कोई भी धनी या सभ्य व्यक्ति उस गरीब पहाड़ी बच्चे की मदद नहीं करता है। लेखक और वकील मित्रों का व्यवहार आधुनिक समाज के यथार्थ को दिखाता है। लेखक और उनके मित्र को पता होता है कि वह बच्चा भूखा है उसे काम की तलाश है। बच्चे को कुछ पैसे देने के लिए जब लेखक का मित्र अपना जेब देखते हैं तो सिर्फ उसमें रू10 का नोट था तो वह उसे बच्चे को नहीं देते हैं। मन में सोचते हैं कि हृदय में जितनी दया है जेब में उतने पैसे नहीं है। लेखक जब उस बच्चे के काम के लिए वकील साहब से बात करते हैं मदद करने के बजाय वकील साहब उस बच्चे के चरित्र के ऊपर कलंक लगाते हैं। किसी के भीतर भी उस बच्चे के लिए दया भावना नहीं होता है।

3. **गरीबी और लाचारी का कठोर सत्य-** भारतीय समाज का यह एक कटु सत्य है कि गरीब वर्ग के बच्चे को जीवन में सिर्फ लाचारी और बेबसी के सिवाय और कुछ भी नही होता। उन बच्चों के पास उनका मौज मस्ती भरा बचपन नही होता है।अपना-अपना भाग्य कहानी में यह 10 वर्षीय पहाड़ी बच्चा घर के परिवेश को देखकर तथा अभाव के कारण घर से भाग जाता है।पेट पालने के लिए वह बच्चा दुकान में काम करता है।लेकिन पैसे तो नही मिलते और झूठा खाना खाने को देते है। फिर भी वह बच्चा बेबस होकर झूठा खाना खाता है। उसका मालिक गुस्से में उसको मारता भी था वह पैसे के लिए सब कुछ सह जाता था। भूख ठंड और बेबसी उनका पीछा कभी नहीं छोड़ती है।

4. **भाग्यवादिता पर करारा व्यंग्य –** जब अत्यधिक ठंड के कारण सुबह 10 साल के उस पहाड़ी बच्चे की मौत हो जाती है तो संपन्न वर्ग के लोग उसके मौत पर शोक मनाने या अपनी जिम्मेदारी समझने के बजाय उसे अपना-अपना भाग्य कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं। यह उच्च वर्ग के स्वार्थपरता का बड़ा यथार्थ है। अगर लेखक और उनके दोस्त उस बच्चे की कोई सहायता करते तो आज यूं उसको मृत्यु को गले लगाना नहीं पड़ता। आज भाग्य के हवाले हम सब कुछ छोड़ देते हैं लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि आज अगर हम किसी की मदद करते हैं तो भगवान किसी न किसी रूप में हमारी भी मदद करते हैं। लेकिन इस कहानी में जिस प्रकार से उस पहाड़ी बच्चे के साथ व्यवहार किया गया, संपन्न वर्ग चाहते तो उसकी सहायता कर पाता वह उसमें समर्थ है लेकिन आज सभी की आंखों में स्वार्थ और लोभ का पर्दा पड़ा है।

5. **प्रकृति का क्रूर यथार्थ –** कहानी का अंत बहुत ही मार्मिक और यथार्थवादी है। जब दुनिया उस बच्चे को कफन तक नहीं देती तब प्रकृति उसे सफेद वर्फ का कफन ओढ़ा देती है। यह दृश्य मानव समाज के निर्ममता पर एक गहरा व्यंग्य और प्रकृति का यथार्थ है।जब किसी ने उस नन्ही सी जान को नही समझा तो प्रकृति माँ ने उसके लिए वर्फ से बना कफन तैयार किया।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि गरीब की मृत्यु भाग्य का खेल

नहीं है। बल्कि यह स्वार्थी और संवेदनहीन समाज की देन है। भाग्य शब्द समाज के संपन्न वर्ग का बस बहाना है जिससे वह गरीब बच्चे की मौत पर अपनी निष्ठुरता ढक लेता है।सहानुभूति दिखाना आसान है, हाथ पकडना मुश्किल। जैनेंद्र हमें आईना दिखाते हैं कि हम सब उस बच्चे के हत्यारे है– कुछ ने मारा और बाकी ने मरते देखा। जब तक हम दुख को भाग्य कहकर किनारे करते रहेंगे, तब तक हर सड़क पर एक और बच्चा ठंड से मरेगा। और हम फिर कह देंगे अपना अपना भाग्य।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अपना अपना भाग्य, जेनेंद्र कुमार, पृष्ठ संख्या–03
2. अपना अपना भाग्य, जेनेंद्र कुमार (1931) हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई।
3. हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास,डॉ. रामचंद्र तिवारी(1968) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

****